



आधुनिक हिन्दी  
गद्य और  
गद्यकार



# आधुनिक हिन्दी गद्य और गद्यकार

डॉ० जेकरा पी० जाज



ग्रन्थाम्ना  
रामबाग-कानपुर

प्रकाशक	अथर्व रामबाग कानपुर-१२
लेखक	डा० जेकर पी० आज
प्रकाशन काल	अप्रैल, १९६६
आवरणमुद्रक	मनोहर प्रिण्टिंग प्रेस, कानपुर
मद्रक मानक	प्रिण्टम आनन्दाबाग कानपुर-१

मू० पंद्रह रुपये

पूज्य गुरुदेव,

आचार्य नन्दलाल वाजपेयी  
उपकुलपति विक्रम विश्वविद्यालय  
का

सादर नमस्कार



# आमुख

अभिव्यक्ति-मात्र के क्षेत्र में विभिन्न भावों अनभूतियों एवं विचार-धाराओं के यथातथ्य तथा प्रभावात्पादक प्रेषण की प्रत्येक भाषा की क्षमता का अध्ययन और तुलना, विकास के पथ पर अग्रसर प्रत्येक भाषा के लिए लाभकारक है। मानव-मात्र की अभिव्यक्ति की भाषा की क्षमता-क्षमता, शक्ति-प्रगति का अध्ययन अभिव्यक्ति-मात्र के क्षेत्र में भाषा की अभिव्यक्ति की क्षारीयियों से अभिमण्डित करने के लिए आवश्यक तो है, भाषा के ऊपर अधिकार पाने का वह एक मात्र साधन भी है। परन्तु इतना अवश्य मानना ही पड़ेगा कि अध्ययन का यह कार्य कम जलन-भरा नहीं है।

शब्देय आचार्य राजपरो जी के निर्देशानुसार 'गली' के अध्ययन में जब मैं संलग्न हुआ तो मुझे लगा कि 'गली' शब्द ही अपने आप में अत्यन्त सरल और अनिश्चित अर्थवाला है। गत दश वर्षों के अध्ययन और मनन के उपरांत मैं इन निष्कर्ष पर आ पहुँचा हूँ कि 'गली' के निर्माण में अनेक तत्त्व संलग्न हैं शैली और व्यक्ति-तत्त्व, शाली और वस्तु-तत्त्व तथा शाली निरपेक्ष रूप से, इस प्रकार विभिन्न दृष्टियों से शैली का अध्ययन किया जा सकता है। परन्तु, इनमें से केवल एक तत्त्व-मात्र की प्रधानता देकर दूसरे की अपेक्षा करके इस क्षेत्र में अग्रसर होना से अग्रसर भ्रांति उत्पन्न हो जाती है। हाँ 'गली' के क्षेत्र में व्यक्तित्व की अपेक्षा कदापि समर्थ नहीं है। परन्तु इसका साथ-ही-साथ यह भी ध्यान में रखना नितांत आवश्यक है कि 'गली' के क्षेत्र में व्यक्तित्व भी अपने आप में स्वतन्त्र नहीं है, व्यक्तित्व की अबाध अभिव्यक्ति-मात्र की शाली मानना भ्रम फलाना मात्र होगा। हमें यह मानन में कोई आगा-पीछा नहीं करना चाहिए कि व्यक्तित्व की विषयानसक्त अभिव्यक्ति ही शैली पद का अधिकारी है। हाँ, विषय की चुनन में व्यक्तित्व स्वतन्त्र अवश्य है परन्तु एक बार चुनाव सम्पन्न होने के पश्चात् व्यक्तित्व को भी विषय का बन्धन अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा, ऐसा न हो कि यह बन्धन एक-तरफा रहे। अपने सच्चे अर्थ में विषय और व्यक्तित्व के इस सामञ्जस्य से ही शैली प्रादुर्भूत होती है।



इस प्रकार कतिपय विद्वान् शैली की विषय-वस्तु से नितात असबद्ध एक ऊपरी वस्तु समझ बैठते हैं ऐसे लोग अपनी इस भुन में यह भी भूल जाते हैं कि शैली अपन आप में साहित्य का चरम साध्य-स्वरूप नहीं है वह केवल साधन मात्र है वक्तव्य की यथातथ्य तथा प्रभावोत्पादक अभिव्यक्ति में माध्यम-स्वरूप बनकर आने में ही उसकी साधकता है । ऐसे आलोचक शैली को केवल बाहरी तटक भटक मात्र मानते हैं । यह दृष्टिकोण भी नितात भ्रमजनक और ऊपरी मात्र है इतना अवश्य है कि शैली केवल सफल तथा वणिष्टय मुक्त अभिव्यक्ति का सहज धर्म है न कि प्रत्येक अभिव्यक्ति का साधारण धर्म । शैली-सम्बन्धी उपयुक्त सभी मूलभूत मायताओं के आधार पर आग बढन का मैने यहाँ प्रयास किया है ।

इस प्रबन्ध के साथ अध्याय हैं । विषय-प्रवेश के प्रथम अध्याय में मैं विषय का आगम और उसकी साधकता गद्य-शैली से हमारा प्रयोजन गद्य और गद्य-शैली का अन्तर आदि पर विचार किया है । शैली के अध्ययन की सबसे बड़ी उपयोगिता मुझ यह लगी कि वह भाषा के ऊपर विजय पाने का सहज साधन है विकासोन्मुख प्रत्येक भाषा की उचित माय पर प्रगति के लिए भी यह अध्ययन अनिवार्य है ।

इसके उपरांत शैली के सद्भातिक अनुशीलन का द्वितीय अध्याय भाषा है । यहाँ मैंने शैली शब्द शैली और शैली शैली के अर्थ शैली के उपकरण शैली के प्रमुख-तत्त्व गद्य शैली की विशेषतायें आदि पर विचार किया है । भारतीय शैली विवेचन तथा शास्त्रात्म्य शैली-विवेचन के अध्ययन के उपरांत मैंने ऐसा ही लगा कि इन दोनों में कोई मूलभूत अन्तर नहीं है । शैली के अर्थ के सम्बन्ध में उसके तीन पहलुओं पर ही-शैली और व्यक्ति-तत्त्व, शैली और अभिव्यक्ति तत्त्व शैली निरपेक्ष तत्त्व के रूप में विचार करना मुझ परेष्ट लगा है । शैली के बाह्य तत्त्वों के अन्तर्गत ध्वनि शब्द, वाक्य अनुच्छेद, प्रकरण अलंकार आदि की विवेचना की गई है जिनके सुविचारित, विषया नुकूल प्रमविष्ण तथा समतारमुक्त प्रयोग से शैली प्रादुर्भूत होती है । ये सब लेखक के व्यक्तित्व पर निर्भर हैं जो शैली का प्रमुख तत्त्व है जिस शैलिक भाषा तब एक एव सौंदर्यात्मक इन तीन कोटियों से विभक्त किया गया है । गद्य-शैलिया की विषयताओं के प्रयोग में मैंने यह निश्चाने का प्रयत्न किया है कि अभिव्यक्ति-मात्र की मूलभूत समस्या के रूप में गद्य और गद्य में शैली की दृष्टि

से कोई अंतर न होत हुए भी इन दोनों का अन्तर आभ्यंतर और बाह्य दाना-भिन्न भिन्न हैं। अब, शैलियों के वर्गीकरण के विषय में व्यक्तित्व तथा विषय वस्तु दानों के सामाजिक के ऊपर बल दत्त हुए अपने विषय का सुविधा का दृष्टि में रखते हुए मन बीसवीं सताब्दी हिंदी गद्य का चार प्रमुख शैलियाँ मानो हैं सावजनिक शैली या पत्रकारिता के लोकांमुख गद्य में अक्सर देखने का मिलती है, विवेचनात्मक शैली या विचारारम्भक गद्य विचारारम्भक निबन्ध और इसी काटिक के आलोचनात्मक प्रयासों में प्रमुख रूप से प्रस्तुति होती है विवरणारम्भक शैली जिसके अध्ययन के लिये व्यापक गद्य उपयोगी समझा गया है, और तरल शैली जिसके अलंकृत और भावात्मक वा रूप हो सकते हैं तरल शैली का सम्बन्ध मन अभिव्यक्ति-विषय से न जोड़कर अभिव्यक्ति-मान के अलंकृत और काव्यात्मक तत्वों से जिह्वा चाहता विद्वान् साहित्य कहा जा सकता है—जोड़ा है।

आज के चार अध्यायों में उपयुक्त चार शैलियाँ का विकासारम्भ अध्ययन है। यहाँ प्रत्येक अध्याय में मन शैली-विषय का विषय विषय साध जाकर उसकी पृष्ठभूमि में शैली का स्वरूप हिंदी में उसका विकास बीसवीं सताब्दी में उसका प्रमुख उदाहरण अक्सर प्रमुख लेखकों से नवल चार ही मन सुविधा का दृष्टि में रखते हुए चुना है।

यह एक बात विशेष उल्लेखनीय है। यद्यपि मैं प्रत्येक शैली को किसी न किसी एक अभिव्यक्ति-विषय से ही जोड़ा है, इसका मतलब यह नहीं कि अब साहित्य रूपों में इसका कोई स्थान ही नहीं है। यहाँ भी मेरी दृष्टि अध्ययन की प्रवृत्ति मुख सुविधा की ओर रही है।

दैनिक पत्रों के अग्रपत्र तथा साप्ताहिक पत्रों की सम्पादकालीन-गियों की सावजनिक शैली का आधार स्वरूप मानते हुए मैं यह विचार व्यक्त किया है कि अभिव्यक्ति की यह विधा सवसाधारण की है और इसी कारण इसकी शैली साधारण, सरल तथा लोगों का प्रवृत्त्युत्पन्न बनाने में सक्षम होती है। योही बहुत आवश्यकता का पुत्र भी इसके लिए विषय सामाजिक है। पाठकों की बुद्धि को नहीं हृदय को प्रभावित करना यही लेखक का उद्देश्य रहना चाहिए। इस शैली के सम्बन्ध में कठिनाई यह है कि यद्यपि इसका स्वरूप अत्यंत सरल है तथा भी इसका अन्तर्गत उनका सरल नहीं है। विचारारम्भक गद्य का विवेचनात्मक शैली का आधारभूत सिद्ध करत

हूए मैंने पंचम अध्याय में यह दिखाने का प्रयास किया है कि व्यक्तित्व की यह विधा विशेषज्ञों की है इसका उद्देश्य पाठक के मस्तिष्क को प्रभावित करना है न कि हृदय का। इसी कारण अधिक भावप्रवण होना इस शैली के लिए लाभदायक नहीं यद्यपि यह भी सत्य है कि कम से कम साहित्य के क्षेत्र में भावों एवं अनुभूतियों की नितांत उन्मा और बहिष्कार असंभव है।

विद्यरणात्मक शैली भी सावजनिक शैली का समान अवसाधारण की है इन दोनों में अंतर यह है कि एक मन्वनात्मक प्रक्रिया की कलात्मक बारीकियों से अभिमूर्धित है जब कि दूसरी एक परिचयात्मक विधा है। विद्यरणात्मक शैली अपने मूल रूप में प्रभावदायक है जो अपने पाठकों को अनन्य और अनन्तर सोदय के साक्षात्कार से मग्नमुग्ध करना चाहती है अपने पाठकों का मनोरंजन उसका मूलभूत तत्व है।

साहित्यिक परम्परा जन ललित शैली का मैंने मूलतः संस्कृत की देन माना है। यह कतिपय का पद-रसिकों की चीज है। यहाँ आकर शैली साधन न रहकर साध्य बन जाती है। इस शैली का अलङ्कृत रूप कबल बाहरी-तटक-मटक मात्र है तो भावदायक रूप नितांत स्निग्ध मनाहूर है। अलङ्कृत शैली के बावजूद यह पाठक को एक ठोस भूमिका पर ल जाने में भी सक्षम है, पाठक की संस्कृत धनाने प्रभावित करने में यह विशेष लाभदायक है।

अपने इस अध्ययनात्मक प्रयास में मुझे श्रद्धेय आचार्य वाजपयी जी का पण-पण पर हस्तावलि मिली है। स्नातकोत्तर परीक्षोत्तीर्ण एक साधारण विद्यार्थी के रूप में मैं आपके पास आया था। जिस ममता और स्नेह से आपने मुझे अपनाया वही मेरे लिए वर्यष्ट था, आपके दिमाग और उन्मास दिल को लेकर जब कभी मैं आपके पास गया तो अनेक अध्ययन में नई दिशा और नई उमंग प्राप्त करके ही लौटा हूँ। श्रद्धेय गुरुवर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए श्रुत पुनः लेना मेरा विचार नहीं है, अतः यहाँ केवल इतना ही कहूँगा कि अपने अध्ययन में आप मेरे लिए अनन्त प्रेरणा और अटक आत्म-विश्वास का अजस्र स्रोत रहे हैं।

मैं अवसर पर, वेरल विश्वविद्यालय के डा० पी० ए० नारायण पिल्ले जी और मार ईशानियस कालिन्न विवेक के प्रो० पी० सी० मेवस्या जी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। मन्वनात्मक के इन दोनों विद्वानों से मुझे काफी गद्दायता मिली है। एच० टी० कालिन्न, पाठ (वेरल) के हिन्दी

विभागाध्यक्ष तथा मेरे गुरुवर प्रा० आर० एस० व्यक्ति जो क प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ, हिंदी अध्ययन और अनुसंधान के लिए मुझ इनसे काफी प्रेरणा मिली है। अपने इस प्रयास में मुझ अनेक महाशयों से भी यथेष्ट सहायता प्राप्त हुई है, उन सबक प्रति मैं आभारी हूँ।

अंत में उन विद्वान और सहृदय साहित्य सेवियों क प्रति मैं सम्पूर्ण हृदय से अपना आभार और कृतज्ञता प्रकटित करता हूँ जिनकी अनवरत साहित्यिक साधना के आधार पर मैंने अपना यह अध्ययन उपरिष्ठ किया है।

हिंदी-विभाग  
सैंट्रल कॉलेज  
अबल, करल ।

जेकब पी० जाज

# विषय-सूची

विषय

आमुख

पृष्ठ

## १-विषय-प्रवेश

विषय का आगम और उसकी सायकता  
गद्य-गली में हमारा प्रयोग  
गद्य और गद्य-शैली का अंतर

१७-२७

१७

२३

२५

## २-शली सैद्धांतिक विवेचन

गली का प्रयोग और अर्थ-विकास  
गली और रीति  
गली का अर्थ  
गली और व्यक्तित्व  
गली और अभिव्यक्ति  
गली साहित्य की उच्चतम निधि का रूप में

२८-७६

२८

९

५२

६६

६८

७३

## ३-गद्य-शैली के उपकरण

एवमि

गद्य

वाक्य

गद्य-गली का प्रमुख तत्त्व

बौद्धिक तत्त्व

भाव-तत्त्व

७७-१२७

७७

७९

९२

१०४

१०५

११०

मौल्य-सत्त्व  
गद्य-शैली की विशेषताएँ  
गद्य-शैली के भेद प्रमेद

१११  
११२  
११९

#### ४-सार्वजनिक गद्य शैली

स्वरूप  
हिन्दी में सार्वजनिक गद्य शैली का विकास  
प० बालमन्द मूल  
भाषाय महावीरप्रसाद द्विवेदी  
गणेशकर विद्यार्थी  
बाबूराव विष्णुराव पराडकर  
हिन्दी की सार्वजनिक गद्य-शैली

१२८-१९३

१२८  
१४३  
१५७  
१६८  
१७९  
१८८  
१९३

#### ५-विवेचनात्मक गद्य-शैली

विवेचनात्मक गद्य-शैली और साहित्यिक विधा  
विवेचनात्मक गद्य-शैली का स्वरूप  
हिन्दी में विवेचनात्मक शैली का प्रारम्भ  
बीसवीं शताब्दी के प्रमुख विवेचनात्मक गलीकार  
डा० राममुन्दरदास  
भाषाय रामचन्द्र गुप्त  
भाषाय नन्दलाल बाजपेयी  
डा० रामबिलास शर्मा

१९४-२६८

१९४  
२०१  
२०५  
२१३  
२१३  
२२१  
२४६  
२६३

#### ६-वर्णनात्मक गद्य-शैली

वर्णनात्मक गद्य  
बीसवीं शताब्दी के पूर्व हिन्दी में वर्णनात्मक गद्य  
प्रेमचन्द  
जनेन्द्रकुमार  
यशपाल  
इलाहजी

२६९-३१५

२६९  
२७२  
२७४  
२८५  
२९३  
२९८

सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अजय	३०६
हिन्दी की विवरणात्मक शैली एक आकलन	३१०

### ७-ललित गद्य-शैली ३१६-३३७

ललित गद्य-शैली और संस्कृत साहित्य	३१६
ललित गद्य-शैली और साहित्यिक विधा	३१८
बोसदों दाताजी पूव ि दी की रचित शैली	१२१
जयराकरप्रसाद	३२३
हिन्दी की रचित गद्य-शैली एक आकलन	३३०

### सहायक ग्रन्थ-सूची ३३८-३४४

आधुनिक  
हिन्दी  
गद्य  
और  
गद्यकार





१

## विषय-प्रवेश

### विषय का आशय और उसकी सार्यकता

भाषा अपने प्रारम्भिक दिनों में अत्यन्त सामान्य और साधारण स्वरूप की अपनाकर प्रादुर्भूत होती है। उस समय उसका मन तो कोई सुनिश्चित और सुष्ठु स्वरूप रहता है और न विचारों एवं भावों की सम्यक अभिव्यक्ति की यथेष्ट शक्ति का उसमें संचार हो पाना है। न उसकी बोलने वाली जनता महान गम्भीर चिन्तन और स्निग्ध-मधुर भाव की भाषा के द्वारा अभिव्यक्ति के लिए बचन रहती है और न भाषा इन सबकी अभिव्यक्ति के लिए सज्जम रहती है। परन्तु परिवर्तनकारी समय के व्यतीत हो जाने पर जिस प्रकार भाषा-मात्र की बोलने वाली जनता के दिल और दिमाग परिष्कृत एवं सुवर्धित बनत जात हैं उसी प्रकार भाषा में भी अभिव्यक्ति की वारंवारियों का संचार होता जाता है। प्रत्येक सफल भाषा में अभिव्यक्ति—जो वारंवारियों के इस विकास का अपना एक इतिहास है जो वास्तव में उस भाषा-भाषी जनता की संस्कृति के विकास का ही इतिहास है। भाषा के परिष्कृत हाथ होते, प्रतिभावान साहित्यकारों के साथ में पढ़कर बड़े भावों एवं विचारों की पूर्ण प्रभावात्मक एवं कुशल अभिव्यक्ति के लिए सज्जम बन पाना है और इस प्रकार उनमें गंभीरता का प्रादुर्भाव सम्भव हो जाता है। गली भाषा की अभिव्यक्त शक्ति का परिचायक है।

एकमात्र संपूर्ण साहित्य में अभिव्यक्तिमात्र के माध्यम स्वरूप का, अथवा ही समान महत्व और स्थान भाषा एवं स्वीकृत तरह है महान

साहित्य के लिए इन दोनों का समान रूप से सम्यक् विकास नितांत आवश्यक है इसके सम्बन्ध में भी कोई सन्देह नहीं है। अतः साहित्य के क्षेत्र में जिस प्रकार वस्तु पक्ष का अध्ययन अपने आप में महत्वपूर्ण और अनिवार्य है उसी प्रकार शैली पक्ष का भी। भाषा इन दोनों में ॥ किसी भी तत्व की उपस्था कर प्रगति नहीं कर सकती।

शैली का क्षेत्र अपने आप में अत्यन्त उल्लास भरा है। यहाँ प्रथम कठिनाई यह है कि स्वयं शैली का अत्यन्त तरल और अनिश्चित अर्थवाला है। इसके स्वरूप के सम्बन्ध में इसके तत्वों के सम्बन्ध में विज्ञान एकमत नहीं है। शैली के सम्बन्ध में विज्ञानों की धारणा में कितना वैविध्य और वैभेद है इसकी एक पाकी मात्र उपस्थित करने के लिए बसल कतिपय पाश्चात्य विद्वानों का शैली विषयक परिभाषाओं का उत्प्रेषण मात्र करना पर्याप्त होगा। कुछ विद्वानों के अनुसार शैली में व्यक्तित्व ही सब कुछ है और अपनी इसी धारणा के अनुसार उन्होंने शैली का परिभाषाबद्ध भी किया है। बर्न का शैली व्यक्ति ही है।<sup>1</sup> ह्यूसन का शैली अपने मूल रूप में एक वैयक्तिक गुण है।<sup>2</sup> एफ एल ब्रूक्स का साहित्यिक शैली एक व्यक्तित्व का दूसरे व्यक्तित्व का प्रभावित करने का साधन है।<sup>3</sup> पल बट का लेखक के वैयक्तिक निराकरण की विधि।<sup>4</sup> हास बाला का गुड और व्यक्त शैली लेखक में भी उसी गुण का परिचायक है।<sup>5</sup> डिस्रेली का शैली के अलावा लेखक के लिये कुछ दूसरा अपना नहीं।<sup>6</sup> माटेस का एक अच्छा लेखक अपने लेखकों के समान नहीं लिखता उसकी अपनी

- 
- 1 Style is the man himself Buffon
  - 2 Style is fundamentally a personal quality An introduction to the study of Literature p 34
  - 3 Literary style is simply a means by which one personality moves another Style p 48
  - 4 It - style - is the writer's individual way of seeing things - Quoted J Middleton Murry The Problem of Style p 14
  - 5 A chaste and lucid style is indicative of the same personal traits in the author Hosea Ballow
  - 6 An author can have nothing truly his own but his style Disraeli

प्रणाली है <sup>१</sup> गीयमे का सामान्य रूप से कहा जा सकता है कि लेखक की गली अपने मन का विवस्त अनुकरण है, <sup>२</sup> आदि वक्त य गली विषयक इस सूक्ष्म धारणा व परिणाम स्वरूप हैं।

इसी प्रकार शली में भाषा का महत्व देते हुए कहा जाता है गली अपने आधुनिक अर्थ में साहित्य-मञ्चन का वह तत्व है जिसका सम्बन्ध वाक्य संगठन उसका चयन आदि स है <sup>३</sup> गली का अर्थ रचना व लिए गी व प्रयोग की विधि <sup>४</sup> उपयुक्त गी का उपयुक्त स्थान पर प्रयोग ही शली है, <sup>५</sup> आदि। इनक अनिश्चित शली को बवल एक अनिश्चित आभूषण मात्र मानकर उस विचार का परिधान <sup>६</sup> अनुभूत विषय-वस्तु का सजान व उन तरीकों का नाम जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति का सुन्दर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं <sup>७</sup> आदि भी कहे गए हैं। विद्वानों का एक अन्य वग शली में वस्तु-तत्त्व का महत्ता दते हुए कहना है कि अच्छी शली का उत्तम फल महान वक्तव्य वस्त है <sup>८</sup> शली का सौम्य अभिव्यक्ति विचार धारा पर आघत है <sup>९</sup> आदि। कुछ विद्वानों ने अभिव्यक्ति व किसी न किसी गुण क आधार पर गली की परिभाषा निर्धारित करने का प्रयास किया है

- 1 A good writer does not write as people write but as he writes Montesqure
- 2 Generally speaking an author's style is a faithful copy of his mind Goethe
- 3 Style in our modern sense as a theory of composition is an art of constructing sentences and weaving them into coherent wholes Thomas Dequency
- 4 Style means the way in which we use words for the purpose of composition R A Scott-James
- 5 Proper words in proper order- Swift
- 6 (a) The dress of thought Pope
- 6 (b) A good styl fits like a good costume Scott
- 7 हिन्दी-साहित्य की गली गी
- 8 The chief stimulus of a good style is to possess a full rich complex matter to grapple with
- 9 Walter piter Appr ciation with an essay on Style  
Style receives its beauty from the thought it expresses  
Arthur Schopenhaur

जस मर साहब का कहना कि 'गली भाषा का यह गण है जिसके द्वारा लेखक की अनुभूति या विचारधारा का यथातथ्य अभिव्यक्ति सम्भव है।' <sup>१</sup> कुछ लेखकों की दृष्टि में चयन और व्यवस्था ही शली में महत्वपूर्ण है। <sup>२</sup> कुछ लोग मानते हैं कि शली अनावश्यक और उपरिप्लवात्मक सभी बातों के परित्याग से प्रादुर्भूत होती है। <sup>३</sup> किसी किसी की दृष्टि में औचित्य ही 'गली' की परिभाषा का आधार है। <sup>४</sup> ऐसे भी विद्वान हैं जिन्होंने प्रभाषा 'प्राप्ति' की समता को महत्व दिया है। <sup>५</sup>

ऐसे उत्पन्न हुए किन्तु नितांत महत्वपूर्ण विषय के विवेचन एवं स्पष्टीकरण में आधुनिक भारतवर्ष में अपेक्षाकृत कम ही प्रयास किया गया है। हाँ, इतना अवश्य है कि हमारे प्राचीन साधारणों ने रीति विवेचन व अभिधान से शली के अध्ययन और मनन का अद्वितीय और महान प्रयत्न किया है। लेकिन उन लोगों की मौलिक विचारधारा की परम्परा को आज ज्ञान का काय आगे सम्भव नहीं हुआ। हमारे यहां 'गली' के सैद्धांतिक विवरण का प्रयास अत्यन्त अल्पमात्रा में ही हुआ है। इधर उधर प्राप्त 'गली' सब धी प्रसंगगत उल्लेख— जो अधिकतर अपूर्ण ही रह जाते हैं— व अतिरिक्त कल्याणपति त्रिपाठी जी की एक अत्यन्त साधारण काटि की छोटी सी किताब ही हिन्दी में अब तक इस संबंध में उपलब्ध होती है। इसके अतिरिक्त या 'गुरुदयाल

- 1 Style = a quality of language which communicates precisely emotions or thoughts or a system of emotion or thoughts peculiar to the author

The problem of Style p 71

- 2 Style consists in order and movement which we introduce into our thought Buffon Discourse on Style
- 3 A pure style in writing results from the rejection of everything superfluous Mone Necker
- 4 (a) There is nothing in words and styles but suitability that make them acceptable and effective Glanville

(b) The first requisite of style not only in rhetoric but in all composition is perspicuity Whatly

- ५ प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति ही 'गली' का अर्थ और इति है (बर्नार्ड या) उद्धृत हिन्दी साहित्य काय शली।

चौकृति न अपने 'गोघ प्रबोध' द्वितीय युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन, को पृष्ठभूमि व रूप में शैली सम्बन्धी मोटा बहुत विवेचन दिया है। परन्तु पूर्वधारणाओं से मुक्त शैली का व्यापक व्याख्या यहाँ भी सम्भव नहीं हुई है। शैली व अर्थ शैली और व्यक्तित्व, शैली व उपकरण शैली व प्रमुख स्वर, गद्य शैली की विभाजनाएँ, भारतीय राति और पाश्चात्य शैली का सम्पर्क व्याख्या आदि शैली सम्बन्धी अनेक मौलिक समस्याओं की दृष्टि से शैली का सम्पूर्ण विवेचन अब भी उपलब्ध रहा। इसके विपरीत पाश्चात्य देश न आज निम्न युग में आकर इस विषय में भी जाति उपस्थित की है। सर वाल्टर रॉस मिडिल्टन मर, आर्तुर विवल्डर कौच हेरबर्ट रीड एफ० एल० लूकास आदि दार्शनिक विद्वानों ने, शैली सम्बन्धी प्लेटो और अरिस्टोटिल के समय से प्रचलित विचारधारा का अपने मौलिक चिन्तन व द्वारा आगे बढ़ाया है। इन सबको देखते हुए कहना पड़ता है कि शैली विवेचन के प्रति आधुनिक भारतवर्ष अधिकतर उदासीन ही रहा है।

सांस्कृतिक समीक्षा की छोड़कर व्यावहारिक क्षेत्र में भी साहित्य का यह महत्वपूर्ण अंग बहुत कुछ उपनिम्न ही रहा है। मुख्यतः से केवल दो ही शैली के विद्वान अब तक इस आर प्रवृत्त हुए हैं। डा० जगन्नाथप्रसाद गुप्ता 'हिन्दी गद्य शैली का विकास और श्री शंकरदयाल चौकृति द्वितीय युग की हिन्दी गद्य शैलियों का अध्ययन सागर विश्वविद्यालय की पी एच० डी० की उपाधि के लिए स्वीकृत शोध-प्रबंध हैं।

शैली समीक्षा के क्षेत्र में शर्मा जी का कार्य हमारा प्रथम प्रयास कहना चाहिए। वेस तो उन्होंने हिन्दी गद्य के उदय-युग से लेकर १९३२ तक—हमारे गद्य के विकास तथा उसके प्रमुख उपभावों की शैलियों (इतिवृत्तात्मक भावार्थमय आदि शैलियों) का अध्ययन का प्रयास किया है। विद्वान स्वयं ने अपने इस स्तुत्य प्रयास में शैली व सांस्कृतिक विवेचन का वांछित महत्व नहीं दिया है। उनका पूरा ध्यान शैली के अवधानपूर्वक पढ़ने व बाँटने की शैली का स्वरूप गद्य तथा गद्य-शैली में अन्तर आदि विषयों की मूलभूत समस्याओं का कार्य समाधान पाठकों के सामने नहीं आना। भाषा की भावार्थमय, इतिवृत्तात्मक आदि शैलियों का स्वरूप विनायक नायक नायिका उल्लेख अवश्य हुआ है, परन्तु शैलियों का वर्गीकरण, स्वरूप निरूपण विकासक्रम आदि की आर विज्ञान सत्य का ध्यान नहीं गया है। समस्त रूप से कहा जाय तो शर्मा जी के गद्य-शैली का विकास वास्तव में हिन्दी गद्य भाषा का विकास है न कि

शैली का विकास । अनवरत स्थानों पर लक्षक गद्य और शैली को एक ही मान कर चल रहे जस दुबल जी ने मधुघन म विचारार्थक गद्य का उल्लेख आदि । कुल मिलाकर शर्मा जी का काय इस सब ध में हमारा प्रारम्भिक प्रयास हो रहा है ।

चौधुरि जी अपने गोघ प्रबंध म शर्मा जी क प्रयत्न का आगे बढान की ओर कम प्रयत्नशील दिखाई पडत हैं । उ हान भी अपन काय का १९५० तक सीमित तो रखा है सा छाछ दीजिए परंतु विषय की पकड़ उनक प्रबंध म भी विद्यमान नहीं है । शर्मा जी क विवेचन स यदि गद्य और गद्य शैली का पाथश्रव स्पष्ट नहीं हाता सा चौधुरि जी न अपनी विवेचन स इस ओर भी उल्ला हुआ बडा दिया है । शर्मा जी ने यदि हिंदी गद्य मात्र क विकास का ही इतिहास प्रस्तुत किया है- और गद्य के विकसित होने क बाद ही शैली प्रादुर्भूत होती है- सा चौधुरि गद्य की निबन्ध उपपास, कहानी, नाटक पत्र पत्रिकायें गद्यकाव्य आदि विभिन्न विधाओं म कम गए । उ न भी गद्य और गद्य शैलियों का अन्तर दिखात हुए छलिया क विकास एवं विवेचन म प्रयास नहीं किया है । गद्य-गलियों का वर्गीकरण स्वरूप आदि क सबंध में व भी अप हैं । शैली विवेचन क नाम स बहुत कुछ गद्य विधाओं का विवेचन ही यहा उपस्थित किया गया है । हा इतना अवश्य महत्वपूर्ण रहा है कि इने शर्मा जी की अपन छली म विषय के महत्व की स्वीकृत किया है ।

शैली विवेचन म विभिन्न शैलियों का वर्गीकरण प्रत्येक शैली क सामान्य स्वरूप की पृष्ठभूमि म प्रत्येक के विकास-क्रम का अध्ययन आदि की ओर जब तक हिंदी स क्रम बहुत कम ही प्रयास किया गया है ।

गद्य क विकसित होने क बाद ही शैली प्रादुर्भूत होती है यह बिलकुल ठीक है । साथ ही यह भी मानना पडगा कि गद्य की पृष्ठभूमि म ही गद्य शैली का विवेचन सम्भव है । परंतु गद्य और गद्य शैली म कोई अन्तर न मानना ठीक नहीं हागा । यस सा अपन प्रारम्भिक श्रुतों स ही गद्य का प्रयाग अभिव्यक्ति क विभिन्न शक्तों म हाता रहा है और इसा कारण उनमें विभिन्न छलिया का स्वरूप भी-छोटा बहुत अन्तर क साथ ही सही-अपन प्रारम्भिक समय स ही प्रसफुटित और विकसित होते दिखाई पडा । हा प्रतिभावान् लक्षक क काय म पडकर ही प्रत्येक को अपना एक परिनिष्ठित और सबसेममत्र रूप धारण कर सकती है, जसा कि हिन्दी म आचार्य महावीर प्रसाद त्रिवेदी आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जयगंजर प्रसाद तथा प्रमचंद क

कारण सावजनिक विवेचनात्मक भावात्मक एवं वणनात्मक गालियाँ परिनिष्ठित रूप धारण कर सकी हैं।

विचार कर देखन से विदित होगा कि शाली क प्रमुख तीन तत्व हैं शाली व्यक्ति सापेक्ष है वस्तु-सापेक्ष है और है समय सापेक्ष भी। जिस प्रकार व्यक्ति-व्यक्ति में वह रूप बदलती रहती है उसी प्रकार विषय विषय में भी। विषय का शाली के ऊपर प्रभाव क कारण ही एक ही लक्षक द्वारा विभिन्न विषयों पर लिखिन लेखों में शाली सम्बन्धी विभिन्नता दृष्टिगत होगी है। इसी प्रकार एक ही लक्षक के द्वारा एक ही विषय पर विभिन्न अवसरों पर किए गए साहित्यिक प्रयासों में शाली—सबसे जो अन्तर है उसका मूल कारण समय के साथ भाषा तथा व्यक्तित्व में परिवर्तन ही है। अतः इन तीनों तत्वों का यथापि महत्व दत्त हुए व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि पर, विषय विषय का आधार बनाकर गालियाँ के वर्गीकरण स्वरूप निरूपण और विकास सम्भव अपेक्षित के द्वारा बीसवीं शताब्दी में विभिन्न प्रकार के शालियों तथा उनके उन्नायकों का उदघाटन निम्नलिखित साधक समया गया है।

## गद्य शाली से हमारा प्रयोजन

अब एक दूसरा प्रश्न यह हमारे सामने आता है कि शाली क अध्ययन का क्या प्रयोजन है? कुछ लोग कहें कि शाली केवल कतिपय विद्वानों की चीज है साधारण जनता का साधारण साहित्यकार के लिए उसका अध्ययन बिना लाभदायक नहीं है। आलाचक्रा का एक अथ विभाग ऐसा भी कहें शाली है कि आधुनिक वैज्ञानिक युग में इस प्रकार का अध्ययन द्वारा बहवाद मान्य है। परन्तु ये सब आलाचक्रा शाली के स्वरूप संबंधी अपूर्ण या गलत धारणाओं के परिणामस्वरूप हैं। शाली का तात्पर्य है बहवर्ष की पूर्ण तथा प्रभावशाली अभिव्यक्ति और इस दृष्टि से साधारण से साधारण आदमी से लेकर बड़े से बड़े वैज्ञानिक तथा साहित्यकार तक काह भी विस्तार नहीं कर सकता। दूसरे शाली में शाली मानव मात्र के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है और उसकी उपेक्षा करने काई अपनी जीवन शैली में बिजली नहीं हो सकता। शाली का अध्ययन मानव मात्र के सफल जीवन के लिए अनिवार्य है।

साहित्य के क्षेत्र में शाली का अध्ययन और महत्वपूर्ण है। साहित्य-कार का भावजगत् अपने संपूर्ण विभूतियों के साथ पाठक के सामने जब तक



आ उपस्थित नहीं होता जब तक अपन भावजगत की निराली छटा स साहित्यकार अपने पाठक का विभूषित करने में समय नहीं होता। अर्थात् जब तक साहित्यकार अपन वक्तव्य की पूर्ण तथा प्रभावात्मक अभिव्यक्ति में सफरता नहीं पाती तब तक सच्चे अर्थ में वह साहित्यकार के नाम का अधिकारी नहीं है। अनुभूतियों और विचारधाराओं की इस प्रकार अभिव्यक्ति शैली का काम है और इसी कारण शैली का अध्ययन साहित्यकार के लिए अनुरोधनीय है। इस प्रकार जब तक पाठक भाषा विषय का चारीकियों और विनिष्टताओं से अनभिज्ञ रहता, तब तक लेखक की विनिष्ट अनुभूतियों की महान अभिव्यक्ति का आस्वादन उपलब्ध नहीं है। यह तथ्य इसी एक बात से विदित होता है कि यद्यपि हम सामान्य अर्थ में एक भाषा से अच्छी तरह परिचित हैं, तो भी उस भाषा की महान साहित्यिक अभिव्यक्ति की समझ में अक्सर असमर्थ रहते हैं। इसका कारण यह है कि महान अभिव्यक्ति भाषा की विजय उतनी नहीं है जितनी कि भाषा के ऊपर विजय। अतः शैली के अध्ययन की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि वह भाषा के ऊपर विजय पान का साधन है।

भाषा के ऊपर विजय से लाभ यह सिद्ध हो जाता है कि मनुष्य की सकल अभिव्यक्ति की शक्ति का उपाजन हो जाता है। यद्यपि इस उक्ति का किसी मनुष्य के लिए अभिव्यक्ति स्वाभाविक रूप से महान होगी।

When the subject is great and the sentiment then of necessity great the word—

आधिक्य रूप से स्वीकार का जा सकती है, तो भी महान अभिव्यक्ति सदैव प्रयत्नसाध्य है। साहित्यकार और साहित्यास्वादक दोनों की इस आशय प्रयत्नशील रहना पड़ता है। विषय-वस्तु की महान अभिव्यक्ति ही तो शैली है परंतु यह सत्यता कि ऐसी नहीं बाजार में उपलब्ध है। महान साहित्यकार सदैव अपन समय का आनंद रहता है और इसी कारण उसका भावजगत ममसामयिक साधारण जाता व भावजगत् से दूर का है। इस प्रकार युग द्रष्टा गुणनिर्माता और युग परिवर्तनकारी साहित्यकार की महान अनुभूतियों का अभिव्यक्ति प्रयत्न-साध्य है और उसका अजन ओर आस्वादन दोनों भाषा की शक्ति तथा चारीकियों के अध्ययन में मुफ्त है।

अपनी भाषा का चारीकिया व इस अध्ययन का सहज परिणाम यह भी निकलता है कि तम भाषा की जातीय शैली से परिचित हो जाते हैं और

भाषा की शुद्धता तथा सहजता का पालन और उससे उचित भाग में विकास के लिए यह ज्ञान निताव आवश्यक है। जिस प्रकार व्यक्ति-विशेष अपने का पहचान बिना अपना गति-अति से सामान्य अमान्य में परिचित हुए बिना प्रगति नहीं कर सकता, उसी प्रकार भाषा भी अपना असली पहचान के बिना प्रगति के पथ पर अक्सर नहीं हो सकती।

भाषा की सफलता असफलता तथा गति-अति का यह अर्थ अपने आधुनिक युग के निरंतर परिवर्तनोन्मुख और मध्यपूर्ण जीवन में निताव आवश्यक है। निरंतर परिवर्तनशील इस जगत में मानव का भावजगत और बुद्धिगत भी सदैव परिवर्तित होत रहते हैं। मानव निरंतर नये-नये आविष्कार करता रहता है और इसका सहज परिणाम भाषा के ऊपर भी पड़ता है। जब तक इन नये तत्वों का अभिव्यक्ति की शक्ति भाषा अति नहीं करती तब तक उस भाषा भाषी जनता का विकास अवरोध रहेगा। उसी प्रकार, यद्यपि मानव ने बुद्धिजीवी चरण का दावा किया है तो भी वह अपने मूल और सहज रूप में याव प्रवण है, उसके जीवन का मूल तत्व अब भी वास्तव में बुद्धि नहीं बल्कि भाव है और इसी कारण जब तक उसके ऊपर हुए भावों एवं अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए उचित साधन नहीं मिलता तब तक वह प्रगति की ओर बढ़ा बिना ही ओर ही अग्रसर रहेगा। इन सबके लिए एकमात्र साधन भाषा पर अधिकार है और यही शैली के अध्ययन का महत्त्व परिणाम और प्रयोजन है। यह मानव के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग होने के कारण यही भाषा का अध्ययन विशेष लाभदायक है इसमें सन्देह नहीं।

### शब्द और शब्द शैली का अंतर

शब्द का अर्थ एक वस्तु की अभिव्यक्ति से है यह एक स्वविनिर्णय तत्त्व है। जब प्रश्न यह सहज रूप में सामने आता है कि शब्दों का अभिव्यक्तिमान है या शब्दों की अभिव्यक्ति? दूसरे शब्दों में प्रश्न यह है कि शब्दों की अभिव्यक्ति का सामान्य तत्व है या विशेष तत्व। वास्तव में यह कोई नयी समस्या नहीं है। प्लेटो और अरिस्टोटिल के समय में ही इसका सम्बन्ध में विवाद चलता चला आ रहा है। प्लेटो-अरिस्टोटिल के समीप का विचार है कि शब्दों का अर्थ है जो कुछ अभिव्यक्ति में होता है और कुछ में नहीं। परन्तु अरस्तू मप्रदाय के अनुसार शब्दों का एक व्यापक तत्व मानने है। उनका अनु-

सार जितने लेखक हैं सननी ग लिखा भी है।<sup>१</sup> मारन म भी वासन आनि ने रीति को अच्छे लेखक का ही घम माना है।

ग ली का सम्बन्ध केवल अभि यक्ति मात्रम नहीं है उसका तात्पर्य है विषय वस्तु की पूर्ण अभि-यक्ति प्रभावयुक्त अभि-यक्ति, औचित्यपूर्ण अभि-यक्ति विषय तथा यक्ति-त्व प्ररित वगिष्ठयो स युक्त अभि-यक्ति। गली केवल वाक्पटु मात्र नहीं है। श ली अपने आप म साहित्य का चरम लक्ष्य भी नहीं हा सकता। वह विषय वस्तु से लेखक के व्यक्तित्व स अभिन्न है अभेद्य रूप स समन्वित है। अत जब तक विषय वस्तु की पूर्ण और प्रभा-वात्मक अभि यक्ति संभव नहीं हाती तब तक श ली भी प्रादुर्भूत नहीं होती। और अभि-यक्ति की पूर्णता और प्रभावोत्पादन की क्षमता क निश्चय करन का अधिकारी पाठक है न कि स्वयं लेखक। जब तक लेखक का भावजगत अपने पूर्ण रूप म यथातथ्य रूप म पाठक क सामन आ नहीं उपस्थित हाता तब तक वह अभि-यक्ति ग ली पद की अधिकारी नहीं है। ग ली की प्रभा-वोत्पादकता भी अनन्त बागो पर आधुत है। विषय-वस्तु से उनका सीधा सम्बन्ध है। जब तक लेखक का भावजगत पीका रहेगा तब तक केवल ग ग की करामात स पाठक को प्रभावित करन का प्रयत्न उपहासास्पद मात्र रहेगा दूसरे गली म अभिव्यक्ति विषय का गली सज्ञा क अधिकारी जनन की प्रथम गत यह है कि केवल भावजगत भरा पुरा और आकर्षक हो। अथ प्रश्न यह है कि केवल भावजगत की महानता क कारण श ली प्रादुर्भूत हो सकती है? नहीं। जब तक उन भावजगत की अभिव्यक्ति मादानुसार महा-नता का अपने म समेटे हुए नहीं आती तब तक गली प्रादुर्भूत नहीं होती। तो अभिव्यक्ति कस महान हा सकती है? अभि यक्ति का माध्यम है भाषा—श्वनि दाल, वाक्य अनुच्छेद आनि। इन सबका उचित प्रयोग ही अभिव्यक्ति की महानता का परिचायक है और इस उचित प्रयोग की क्षमता लेखक क व्यक्तित्व पर उमक पोहित्व विनन और मनन पर निर्भर है। इसी प्रकार विषय विषय का लक्ष्य में रखन हुए अभिव्यक्ति की सजनात्मक प्रक्रिया के वगिष्ठयों स भी अभिमणित करना परम आवश्यक है। सभी विषयों का उद्देश्य एक सा नहीं रहना। लेखक की श ली विषय की उद्देश्यानुसार अभिव्यक्ति का माध्यम मात्र है। इसी कारण जब वह साधारण जनता को दृष्टि में रखकर

१— प० सीताराम बनवोदी क—समोना दारन पृ० ११६

ध—हिन्दी साहित्य संवत्स पृ० ६०१

पत्र-पत्रिकाओं में लिखेगा तब उस नितांत सरल रखन का प्रयत्न अवश्य करेगा। "सब विपरीत गुणों और चित्त और मनन आदि के अवसर पर गली भी उसी के अनुसार परिष्कृत गमार और समय रूप धारण करती है। मनो विनाशाय प्रणीत उपयाम आदि में गली या मनोरजन के तत्वा से अभिमत हित रहेगी। पाठक का प्रभावित करने के लिए ये सब नितांत आवश्यक हैं।

अर्थात् गली प्रत्येक अभिव्यक्ति का साधारण धर्म नहीं है वह विविध अभिव्यक्ति का सहज धर्म है। गद्य इन तत्वा से अभिव्यक्त हो जाता है ता गली प्रादुर्भूत हो जाती है। गद्य में जब अभिव्यक्ति मात्र के भावप्रतिष्ठित विविध जिसके अविष्टित का निम्न पाठक करेंगे और जो अभिव्यक्ति का पूरा प्रभावोत्पादक तथा आकर्षक बनाने के लिए सद्यः - का समावेश होगा, तब वह सली पत्र का अधिकारी बन जाता है। दूसरे गली में गद्य शैली का केवल सरोर है गली का आत्मा है गद्य का भावप्रतिष्ठित विविध।

## २

### शैली सैद्धांतिक विवेचन

#### शली शब्द प्रयोग और अर्थ विकास

हिन्दी के अद्यतन काव्य साहित्य में प्रयुक्त 'शली' शब्द अपने आधुनिक अर्थ में साहित्य-शास्त्री के लिए समान रूप में एक नवीन उपलब्धि है। इसका मतलब यह बदायि नहीं है कि यह शब्द नितांत नूतन है या इस शब्द का पहला प्रयोग ही नहीं हुआ है बल्कि भारतीय वाङ्मय के लिए यह शब्द एकदम अपरिचित था। वस्तुतः 'शली' शब्द अत्यन्त प्राचीन है और इसकी उत्पत्ति 'शील' शब्द से हुई है। शीलमय स्वार्थगणनीया चारित्र्य आचार्याणामिय शीलपरतामायनामिधाय विनोपण विवर्णातीति प्राच्य<sup>१</sup> ॥ संस्कृत में इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग कुल्लू भट्ट (सन् ११५०-१३०० के लगभग) ने मनुस्मृति की टीका में किया है। जहाँ पर 'शली' शब्द किसी सूत्र की व्याख्यान पद्धति के लिए प्रयुक्त जान पड़ता है। प्रायेण आचार्याणा-मिय शैली मत सामान्यनामिधाय विनोपण विवर्णाति। इस प्रकार संस्कृत में अपने प्रारम्भिक प्रयोग में यह शब्द आलोचनात्मक श्रद्धा की रचना प्रणाली के लिए ही प्रयुक्त किया गया था।

१- प० तारानाथ तर्कवाचस्पति भट्टाचार्य गङ्गास्तोम महानिधि पृ० ४४८

२- मुल्तूफ भट्ट की टीका मनुस्मृति १/८ बल्लभ उपाध्यायनत भार-  
तीय साहित्य शास्त्री स. डा० नगेन्द्र द्वारा भारतीय काव्य शास्त्र की  
भूमिका पृ० १३ में उद्धृत।

किन्तु हमारे आधुनिक काव्य शास्त्र में गली शब्द का अर्थ नितात भिन्न है उसका संबंध अब साहित्य में अभिव्यक्ति के साथ स्थापित किया गया है और अभिव्यक्ति की पद्धति के अर्थ में शैली का प्रयोग आधुनिक ही है । हिंदी में इस में इस शब्द का अपन अद्यतन अर्थ में प्रचार और प्रसार अंग्रेजी के 'स्टाइल (style)' शब्द के परिभाषा स्वरूप हुआ है और इस दृष्टि से यह अंग्रेजी का शृणो है ।

## शैली और रीति

कतिपय आलोचकों ने 'स्टाइल' शब्द के पर्याय के रूप में रीति शब्द का प्रयोग क विरुद्ध चेतावनी दी है । इससे सिद्ध हो जाता है कि शैली और रीति शब्द पर्यायवाची नहीं हैं । पाल जी का यह मत है कि रीति शब्द अंग्रेजी के 'स्टाइल' शब्द के जैसा कवि व्यक्तित्व-अभिव्यक्ति का छाया नहीं है । समस्त विद्वान सनीति कुमार डन भी यही मत व्यक्त किया है । इस संबंध में हमारे आलोचकों का मुख्य रूप से तीन विभाग हैं कुछ लोगों का मत है कि शैली और रीति पर्यायवाची शब्द नहीं हैं जैसा आचार्य सीताराम चतुर्वेदी कल्पनावलि त्रिपाठी आदि । चतुर्वेदी जी कहते हैं कुछ लोग न रीति का ही शैली मान लिया है । किन्तु रीति कवल काव्य रचना का ढंग है । इनके विपरीत गला यह साधन है जो वाणी की अभिव्यक्ति में अभिनय आकषण रचने का साधन करे । नामन न पत्तों की विषय रचना को रीति (विशिष्टा रचना की इस रीति का शैली के विनिष्ट और व्यापक रूप से संबंध भिन्न मानना चाहिए । कल्पनावलि त्रिपाठी के अनुसार कुछ लोगों में यह एक साधारण मन से चल पड़ा है कि भारतीय साहित्य शास्त्र में वर्णित रीति ही आधुनिक साहित्य शैली है । कुछ दूर तक यह ठीक भा कहा जा सकता है । प्राचीन रीतियाँ काव्य गलियाँ ही हैं । किन्तु आधुनिक साहित्य जगत में शैली का नाम से जिस तत्त्व का बोध होता है वह प्राचीन आचार्यों द्वारा वर्णित रीतियाँ नहीं हैं बरन् वे साहित्यिक अभिव्यक्ति की प्रणालियाँ हैं । अतः रीति और शैली का तात्त्विक अन्तर यही है कि पहली तो काव्य रचना

- १— डा० नगद भारतीय काव्य-शास्त्र की भूमिका पृ० १३ ।
- २— डा० नगद भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, पृ० १३ ।
- ३— हिंदी साहित्य संवत्स पृ० ६१० ।

की रीति है और दूसरी साहित्य की अभिव्यक्ति प्रणाली है। दोनों की आधार भूमि में तात्त्विक अन्तर है। 'शली उस साधन का नाम है जो वाक्यशक्ति की अभिव्यक्ति में अभिनय तथा समर्थ शक्ति का संचार करे। पर

वामन ने काव्यालंकार सूत्र वृत्ति में पदों की विशेषवृत्ति रचना का रीति माना है। अस्तु कहने का तात्पर्य यह है कि गुणों के आधार पर की गई विविष्ट पद रचना रूप रीति 'शली' से भिन्न है।<sup>१</sup> इस सम्बन्ध में मलयालम के एक प्रसिद्ध आलोचक एम० पी० पाल का अभिमत हमसे उद्धृत किया है।<sup>२</sup>

'एक विपरीत प० बलदेव उपाध्याय प० रामदत्त मिश्र आदि आलोचकों ने शली और रीति में कोई अन्तर नहीं माना है। उपाध्याय जी लिखते हैं 'अप्रती भाषा में रीति (माग क) शिष्ट शब्द प्रयुक्त होता है। प० रामदत्त मिश्र के अनुसार 'रीति या वृत्ति का आधुनिक नाम शली है।'<sup>३</sup>

इन दोनों विभागों के आलोचकों के अतिरिक्त कतिपय विद्वान् ऐसे भी हैं जो शली और रीति में ईषद अन्तर मानते हैं जैसे हिन्दी में डा० नगद्वी लिखते हैं 'विविष्ट अर्थ में रीति और शली में बहुत अन्तर नहीं है। 'शली' के दो मूल तत्त्व हैं एक व्यक्तित्व और दूसरा वस्तु तत्त्व।

वास्तव में 'शली' के व्यक्तित्व और वस्तु तत्त्व में व्यक्तित्व-तत्त्व ही प्रधान है, उसी के द्वारा शली के बाह्य उपकरणों का समन्वय-अनन्यता में एकता की स्थापना करता है। व्यक्तित्व तत्त्व का रूप है एकता शली द्वारा व्यक्ति की आत्माभिप्रेक्षण अर्थात् शली का आत्माभिप्रेक्षक रूप और दूसरा पात्र तथा परिस्थिति के साथ शली का सामंजस्य। भारतीय रीति-विवेचन पहला रूप विरल है। परन्तु इस प्रसंग में एक बात याद रखनी चाहिए। इसमें संदेह नहीं कि उस वांछित महत्त्व नहीं पाया गया। फिर भी उसकी स्वीकृति का संवत्स अभाव नहीं है। व्यक्तित्व तत्त्व के दूसरे रूप का विधान तो भारतीय काव्यशास्त्र में निश्चय ही मिलता है। यद्यपि वामन ने इसका स्पष्टीकरण नहीं किया किन्तु वामन ने पूर्व भरत ने स्पष्ट नियम दिया

१— शली पृ० ११९-१२०।

२— पीछे देखिए पृ० ४।

३— भारतीय साहित्य शास्त्र का दूसरा भाग पृ० २१३।

४— काव्यालंकार शिष्टोपयोग पृ० ३३।

है कि नाटक में भाषा पात्र के गाल-स्वभाव की अनुवर्तिनी होती चाहिए।  
उपर आनन्दवधन न तो बसता वाय और विषय क औचित्य का रीतियों का  
नियामक ही माना है।<sup>१</sup> इस विवेचन का उपसंहार करत हुय व लिखत हैं

१—रीति और शैली का वस्तु तत्त्व तक ही है। आरम्भ में भरत  
और यूरॉप दोनों ने काय शास्त्रों में प्राय वस्तु रूप का ही विवेचन हुआ  
है। २—भारतीय रीति में व्यक्ति-तत्त्व की संख्या अस्वीकृति नहीं है जब कि  
व आदि ने माना है। ३—फिर भी अपने वर्तमान रूप में शैली में व्यक्ति तत्त्व  
का जितना महत्व है उतना भारतीय रीति में कभी नहीं रहा। ४—इस  
प्रकार रीति और शैली के वर्तमान रूप में व्यक्ति-तत्त्व की मात्रा का अन्तर  
अब में हो गया है।

आचार्य नन्दुलारे बाजपेयी ने डॉ० नगे से भी एक कदम और  
आगे बढ़ाते हुए कहा है रीति का मूल अर्थ संघटना है। संघटना  
किसकी ? यह प्रश्न उठने पर हम कह सकते हैं संघटना गणों और वाक्यों  
की संघटना वाक्य के वास्तुपक्ष के साधन रूप अभिव्यजना की। यद्यपि  
रीति शास्त्र में कवि की व्यक्तित्व और स्वभावगत विनयताका का भी आचार्य  
सद्भातिक रूप से रीतिवादियों ने स्वीकार किया है परन्तु व्यावहारिक भूमिक  
पर रीति का उपयोग व्यक्तित्व विनयताओं के निर्धारण में अत्यल्प हुआ है।

आज शैली शास्त्र का प्रयोग कला और गित्य के समस्त उपकरणों की अभि-  
व्यक्ति के लिए किया जाता है। रीति और शैली का जो विषयगत स्वरूप आरम्भ में  
सब समानाधिक्यता है। रीति और शैली का जो विषयगत स्वरूप आरम्भ में  
प्रचलित था उसमें तो कोई विनय अन्तर ही नहीं आधुनिक युग में कवि  
की शाब्दिक भाषागत योजनाओं के विवेचन में भी रीति और शैली शास्त्र समान  
अर्थ में व्यवहृत हो सकते हैं। इससे आगे बढ़कर जब कविता और रसका की  
व्यक्तिगत और स्वाभाविकता विनयताओं का विवेचन शैली का सामा में होने  
लगा तब रीति शास्त्र का प्रयोग घटता गया यद्यपि रीति शास्त्र में इतना  
सामर्थ्य है कि हम चाहें तो कवियों और रसका की रूपगत व्यक्तित्व विनय  
ताओं तक रीति का प्रयोग कर सकते हैं।

- १— भारतीय वाक्य शास्त्र की भूमिका पृ० ५३ ५४।  
२— वही, पृ० ५४ ५५।  
३— रीति और शैली नामक निबंध में आचार्य नन्दुलारे बाजपेयी।



इस विवेचन से विदित है कि रीति और गली की मूलभूत एकता का आचाय वाजपयी जी ने स्वीकार किया है।

अब हमारे सामने प्रश्न यह है कि घाली तथा रीति को एक मान या उन दोनों में कोई मूलभूत धर्म्य को स्वीकार करें। यदि हम रीति और घाली को अलग अलग मानें तो उसका तात्पर्य क्या यह नहीं है कि गली विवेचन भारतीय काव्यशास्त्र के लिए एक नवीन उपलब्धि है जो वास्तव्य की देन है। अतः चिन्तनीय है कि भारतीय रीति विवेचन तथा वास्तव्य घाली विवेचन में कहीं तक साम्य है और हमारे आचार्यों ने रीति विवेचन में व्यक्तित्व का क्या स्थान दिया है।

हाथ बिलकुल ठीक है कि हिन्दी में आजकल व्यवहृत गली गद्य का प्रवाह किसी भी अलंकार शास्त्र के प्रकाश में नहीं मिलता।<sup>१</sup> लेकिन इसका मतलब यह कदापि नहीं हुआ कि गली विवेचन हमारे काव्यशास्त्र के लिए निराला नई चीज है। वैसे तो हमारा साहित्य शास्त्र व प्रारम्भिक युग में ही हम इस ओर सक्त मिला है। भरत मनि ने अपने नाट्यशास्त्र में 'प्रवृत्ति विवेचन' व अतःगत घाली के अर्थ की ओर इंगित किया है। भरत की व्याख्या व अनुसार प्रवृत्ति वह है जो पृथ्वी पर के नाना देवों व वस भाषा तथा आचार की वार्ता का स्थापन करें। प्रवृत्ति रीति कस्मात्? उच्यते पृथिव्यां नाना दृग्वि भाषाचारवार्ता स्थापयतीति प्रवृत्ति। वृत्ति-व्यतिरेक निवेदन।<sup>२</sup> भरत के इस विवेचन में भारतीय रीतिविवेचन का मातृरूप विद्यमान है ही साथ ही उनका प्रवृत्ति दृष्टि का अर्थ अधिक व्यापक भी है— वह भाषा से ही नहीं पूरे रहन-सहन के दृष्टि में समाविष्ट है जो आधुनिक गली व व्यापक अर्थ की ओर संकेत करता है।

भरत के उपरान्त वाणभट्ट ने हृषिकेश व आरम्भ में लिखा है कि लोकोक्त्यलोक विरुद्ध भाषा का पक्ष करत है जब कि प्रतीक्य लोक साज सज्जा के बिना बसल वर्ण मात्र के उपासक है। दक्षिणात्य कवियों ने उत्प्रेक्षा का माननीय स्थान दिया जब कि मोह कवियों ने केवल वर्णों के आडम्बर को

१— भारतीय साहित्यशास्त्र ब्रह्मदेव उपाध्याय दूसरा भाग।

२— भारतीय साहित्यशास्त्र दूसरा भाग पृ० १३४।